दुर्गा चालीसा
नमो नमो दुर्गे सुख करनी,
नमो नमो अम्बे दुःख हरनी|
निरंकार है ज्योति तुम्हारी
तिहूँ लोक फैली उजयारी|
शशि ललाट मुख महा विशाला,
नेत्र लाल भृकुटि विकराला|
रूप मातु को अधिक सुहावे,
दरस करत जन अति सुख पावे|
तुम संसार शक्ति लिय कीना,
पालन हेतु अन्ना धन दीना|
अन्नपूरणा हुई जग पाला,
तुम्ही अदि सुंदरी बाला|
प्रलय काल सब नाशन हारी,
तुम गौरी शिव शंकर प्यारी|
शिव योगी तुम्हारे गुण गावे,
ब्रहमा विष्णु तुम्हे नित ध्यावें|
रूप सरस्वती को तुम धारा,
दे सुबुधि ऋषि मुनिन उबारा|
धरा रूप नरसिम्हा को अम्बा,
प्रगट भई फाड कर खम्बा|
रक्षा करी प्रहलाद बचायो,
हिरनाकुश को स्वर्ग पठायो|
लक्ष्मी रूप धरो जग माहि,
श्री नारायण अंग समाही|
क्षीरसिन्धु मे करत विलासा,
दया सिन्धु दीजे मन आसा|
हिंगलाज में तुम्ही भवानी,
महिमा अमित न जात बखानी|
मातंगी धूमावती माता,
भुवनेश्वरी बागला सुखदाता|
श्री भैरव तारा जग तारनी,
छिन्न भाल भव दुःख निवारनी|
केहरी वाहन सोह भवानी,
लंगूर वीर चालत अगवानी|
कर में खप्पर खडग विराजे,
जाको देख कल दर भाजे|
सोहे अस्त्र और त्रिशूला,
जाते उठत शत्रु हिय शूला|
नगरकोट में तुम्ही विराजत,
तिहूँ लोक में डंका बाजत|
शुम्भु निशुम्भु दनुज तुम मारे,
रक्त -बीज शंखन संहारे|
महिषासुर नृप अति अभिमानी,
जेहि अघ भर महि अकुलानी|

सेन सहति तुम तिहि संहारा|
परी गाढ़ संतन पर जब जब,
भाई सहाय मातु तुम तब तब|
अमरपुरी अरु बासव लोका,
तवा महिमा सब रहें अशोका|
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी,
तुम्हें सदा पूजे नर नारी|
प्रेम भक्ति से जो यश गावे,
दुःख दरिद्र निकट नहीं आवे|
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई,
जनम मरण ताको छुटी जाई|
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी,
योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी|
शंकर आचरज तप कीनो,
काम क्रोध जीति सिब लीनो|
निसिदिन ध्यान धरो शंकर को,
काहू काल नहीं सुमिरौं तुम को|
शक्ति रूप को मरम न पायो,
शक्ति गयी तब मन पछितायो|
शरणागत हुई कीर्ति बिखानी,
जय जय जय जगदम्बा भवानी|
भई प्रसन्ना आदि जिगदम्बा,
दई शक्ति निहीं कीन विलम्बा|
मोकु मातु कष्ट अति घिरो,
तुम बिनि कौन हरे दुःख मेरो|
आशा तृष्णा निपिट सतावें,
मोह मदादिक सब बिन्सावें|
शतु्रु नाश कीजे महारानी,
सुमिरौं एकचिति तुम्हें भवानी|
करो कृपा हे मातु दयाला,
रिद्धि सिद्धि दि करहु निहाला|
जब लगी जियूं दया फल पाऊँ,
तुमरो यश मैं सदा सुनाऊँ|
दुर्गा चालीसा जो नर गाए,
सब सुख भोग परमपद पावे|
देविदास शरण निजि जनि,
करहु कृपा जगदम्बा भवानी|